29/10/66 शनिचरवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– मरना तेरी गली में, जीना तेरी गली में.....

ओम् शांति! मीठे–2 मरजीवे बच्चों ने ये गीत सुना। गीत भी कहता है कि तेरी गोद में मर और जीवेंगे। मनुष्य मरते हैं तो फिर जाकर दूसरा जन्म लेते हैं। ऐसे है ना बच्चे, वो शरीर छोड़ देते हैं। तुम इन शरीर के साथ उस दुनिया से मर, उस दुनिया में, नई दुनिया में चलने के लिए बेहद के बाप के गोदी में आय करके जीते जी मरते हो। मर जीते हो। इसको कहा जाता है–मरजीवा जन्म। किसके पास? बेहद के बाप के पास। ये एक ही बार होता है। समझा ना बच्ची! बस, ये संगमयुग पर जब बेहद का बाप आते हैं, तो बच्चे आय करके बोलते हैं–हम अभी जीते जी आपके बच्चे बनते हैं। आपके बच्चे अर्थात् बाबा, हम आपके बच्चे बनते हैं। वो तो सभी फॉलोअर बनते हैं ना बच्ची, संन्यासियों वगैरह के जाकर फॉलोअर बनते हैं। ये जीते जी, ये देखो बच्चे यहाँ जीते जी, वो दूसरा अपना घर–बार छोड़ फिर जीते जी इस बाप के पास पल रहे हैं। तो बोलते हैं–हम अभी जीते जी आपके पास आपके बन जाते हैं। तो फिर क्या होगा? जीते जी हम आपके पास मरेंगे, फिर ये जो पुरानी दुनिया है, विकारी दुनिया है, वो सब छोड़ डालेंगे। अभी जो बाबा नया युग वा नई सृष्टि रचते हैं। नई सृष्टि में नया युग में, उस नई सृष्टि में चलेंगे, पुरानी सृष्टि को छोड़ देंगे। अर्थ सुना अभी, नहीं तो फिर बजावें! कि हम जीते जी आपके बन। अच्छा, भक्तिमार्ग में भी पुकारते– जब आप आएँगे, मेरे तो आप ही होंगे और फिर दूसरा न कोई। मैं आपका जीते जी बन आपसे हम पूरा वर्सा 21 जन्म का ले लेंगे और फिर श्रीमत पर चलेंगे; क्योंकि श्रीमत तो गीता में, है ही उसमें– श्रीमत भगवानुवाच, ऐसे है ना बच्चे; क्योंकि ऊँचे–ते–ऊँचा है भगवत्। ये ऊँचे–ते–ऊँचा नहीं है। ये तो शरीरधारी हैं ना। ये कौन कहते हैं? वो जिसे अपना शरीर नहीं है और सबको शरीर है। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर को सूक्ष्मवतन में भी शरीर है। यहाँ तो सबको मनुष्य का शरीर है। शिवबाबा, उनको तो शरीर नहीं होता है ना– न सूक्ष्म और न स्थूल। बाप ने समझाया है कि मेरे को कोई शरीर नहीं होते हैं। मैं तुम्हारा बाप हूँ। मैं भी आत्मा हूँ; परन्तु मेरा नाम ड्रामा के प्लैन अनुसार शिव रखा हुआ है। मुझे कहते ही हैं शिव यानी आत्माओं का बाप। समझा ना! शिव जब कहते हैं ना बच्चे, व्यापारी लोग भी शिव बूड़ी यानी ये नॉट, उसको कहा जाता है–शिव। तो आत्मा भी तो ऐसे ही शिव है। तो अभी तुम जानते हो कि हम शिवबाबा के, जो भी आत्मा है, हम भी ऐसे ही आत्मा हैं। हम अभी जीते जी शिवबाबा के बने हैं और शिवबाबा कहते हैं–मेरे पास भले रहो,खाओ,पिओ। भले घर में भी रहो,खाओ,पिओ; क्योंकि सबको तो मैं यहाँ रहाय नहीं सकता हूँ; क्योंकि यहाँ तो बनने के हैं। ये सूर्यवंशी और चंद्रवंशी घराना स्थापन हो रहा है। हाँ, हो सकता है कि जो बच्चे पूरे आ करके मेरे बन जाते हैं, मेरे पास आकर रह जाते हैं। ऐसे रहते हैं। देखो, अरविन्द घोष का आश्रम है ना, उनमें भी जाकर रहते हैं। घर–घाट वहाँ जाकर बनाते हैं। ..... ऐसे बहुत जगह है जहाँ बाल–बच्चा ले करके जा करके रहते हैं उनके पास; परन्तु वहाँ तो उनको कुछ मिलता नहीं है ना बच्चे। ये तो होता ही है जबकि संगम आता है। तब बाप आते हैं और समझाते हैं–बच्चों, ये सब तुम्हारा ये मृत्युलोक में अंतिम जन्म है। अभी तुमको अमर लोक में चलना है। ये विकारी हैं। मृत्युलोक भी कहाँ है? (किसी ने कहा–सतयुगी दुनिया...) कहाँ, यहाँ है? देखने में आते हैं कोई? (किसी ने कहा–अभी तो देखने में नहीं) अरे मुट्ठी, ये सामने बैठे हैं ना, देखो। बोलो, ये देखो बाबा, ये है ना निर्विकारी लोक, उनके चित्र हैं ना। और बरोबर जब बाप के आगे थे तो तुम इनको मत्था टेकते थे लक्ष्मी–नारायण के मंदिर में और कहते थे–आप

निर्विकारी हो; हम विकारी हैं। आप सतयुगी हो; हम कलहयुगी हैं। आप स्वर्गवासी हो; हम नर्कवासी हैं। देखो, ये जो सीढ़ी बनती है ना, इसमें बड़ी बुद्धि चाहिए। ये सीढ़ी को तो ऐसे बनाना चाहिए फर्स्टक्लास करके, जो मनुष्यों को दिखलाने से, भारतवासियों को; क्योंकि है भारतवासियों के लिए। जो भी देवी–देवताओं का खास पुजारी होते हैं, उनको एकदम पूरी सीढ़ी दिखलाना चाहिए, समझाना चाहिए; क्योंकि 84 बहुत गपोड़ा है। एक तो जो कल्पवृक्ष है, ये ड्रामा, ये जो चक्र है सृष्टि का, उनको आयु दे दिया है लाखों बरस और फिर 84 लाख योनियाँ। यहाँ बिल्कुल क्लीयर बताए जाते हैं 84 जन्म। तो ये बताना चाहिए सीढ़ी में। सीढ़ी तो ऐसी बुद्धि में, जो ज्ञानी तू आत्मा है, उनका बहुत अटेंशन देना ... सीढ़ी में। जब–2 बाबा कोई डायरेक्शन देते हैं तो जो अपन को ज्ञानी तू आत्मा, महारथी समझते हैं, बाबा नाम भी लेते हैं उनका अक्सर करके कि उनको हर एक चीज़ में अटेंशन देना चाहिए कि बाबा सीढ़ी के ऊपर जो इतना ज़ोर देते रहते हैं; क्योंकि सीढ़ी से 84 जन्म सिद्ध करना है और 84 जन्म होते भी हैं भारत के, और कोई के भी नहीं होते हैं। बच्चे, ये सभी बातें 84 जन्म, वो तो कह देते हैं– सभी मनुष्य 84 जन्म लेते हैं। एक जन्म मनुष्य मनुष्य का, बाकी 83 जन्म वो लेते हैं। तो तुमको ये बातें क्लीयर करनी हैं ना। जो भी प्रदर्शनी है उसमें ये सभी बातें क्लीयर...– मनुष्य ये कहते हैं और शिव भगवान ये कहते हैं। ये जो थोड़ी बातें हैं, वो ज़रूर लिखनी चाहिए। समझा ना! ये कहते हैं कि ज्ञान सागर, पतित–पावन, परलौकिक, परमपिता परमात्मा शिव सर्वव्यापी है। भगवानुवाच कि नहीं, मैं सबका बाप हूँ। समझा! सबका सद्गति वगैरह करने वाला हूँ। मनुष्य कहते हैं कि ये जो चक्कर है, सृष्टि चक्कर, उनकी आयु लाखों बरस है। शिवबाबा कहते हैं कि नहीं, इसकी 5000 बरस है। मनुष्य कहते हैं 84 लाख जन्म है। बाप कहते हैं–नहीं, 84 जन्म का है। समझा! ऐसी जो भी मुख्य बातें हैं, वो लिख देना चाहिए। देखो, बाबा कहते रहते हैं ना। किसको कहते हैं? जो बिल्कुल, जैसे देखो जगदीश है, वो संजय उसको नाम मिला हुआ है। अरे, उनके डायरेक्शन्स जैसे कि उनके पास जाते हैं; क्योंकि उनको ये बनाना होता है ना। तो उनको ये खयालात में करना चाहिए। विचार–सागर की बड़ी ज़रूरत रहती है। भले वो विचार–सागर–मंथन भी बहुत करते हैं। ऐसे नहीं कि नहीं करते हैं। देखो, गैज़ेट(Gadgets-साधन) निकालते हैं, ये क्या मैग़जीन निकालते हैं, ये सभी करते हैं; परन्तु बाबा जैसे कहते हैं ना– शिव भगवानुवाच। वो मनुष्योवाच। तो मनुष्योवाच सो तो पण्डित और विद्वानों और आचार्यों से ही सब सीखते हैं ना। तो उनमें ये तो, सीढ़ी में तो बिल्कुल अच्छी तरह से या सीढ़ी के बाजू में–भगवान ये कहते हैं, मनुष्य ये कहते हैं। सीढ़ी में तो सभी बात आ जाती हैं। जो भी मुख्य बातें हैं, तुमको भी (...), अभी तुम लोग तो क्या लिखेंगे, यहाँ तो कोई भी एक भी मुझे देखने में नहीं आता है, है ना, जो बैठ करके लिखें। पाँच/सात बातें हैं, अरे भई तुम आज लिख करके देना, खास पाँच बातें। अभी इनको भी, जगदीश को भी कहता हूँ। वो जो भी होशियार–2 होते हैं ना, बाबा नाम लेते हैं बिल्कुल अच्छी तरह से, भई बृजमोहन है, ये गुलज़ार है, ये बहुत वो सब समझते हैं। अच्छा, ऐसे भी समझते हैं, बल्कि बाबा कहते हैं– जो ज्ञानी तू आत्मा अपन को समझते हैं, ये मुख्य बातें तो लिख करके (...) कि मनुष्य ये कहते हैं, शिवबाबा ये कहते हैं। जैसे इसमें लिखा हुआ है ना ये 5 ये ऊपर में, ये क्या संबंध है, क्या, उसमें ये कंट्रास्ट मनुष्य–उनका। अच्छा, और बहुत किताब बड़े–2 बनाने से क्या होगा, वो तो पढ़ने से ही मनुष्य का माथा खराब हो जाता है। नहीं, पाँच/छः। शिव भगवान ये कह रहे हैं ब्रह्मा द्वारा और ब्रह्माकुमारियों

द्वारा और ये मनुष्य ये कहते हैं। तो ये मुख्य जो बातें हैं ना, लिख दें। तो अभी प्रदर्शनी होती है ना बच्ची। दूसरा– आजकल विकार के ऊपर है अबलाओं के ऊपर अत्याचार। उसमें भी एक डायलॉग बनावें बच्चियाँ। जब ये सब दिखलाते हैं ना, दिखला करके पिछाड़ी में जा करके डायलॉग कि विख के लिए मनुष्य क्या करते हैं, कैसे उनको मारते हैं, कैसे उनको विख न मिलते हैं तो बोलते हैं– विख दो, नहीं तो ये खाता हूँ, कोई गोली ले करके, बोलो(बोले)– विख दो, नहीं तो मैं ज़हर लेता हूँ। कोई जाकर ये किनारे पर कहाँ बैठकर, दो नहीं तो मैं कूदता हूँ। समझे ना। ऐसे–2 डायलॉग विख के लिए। वो बिचारियाँ बड़ा बैठ करके उनको समझाती हैं– ...न करो। वो बोलता है कि नहीं, हम नगन करूँगा। बात है बहुत समझने की और ये तो तुम्हारा है ही इसके ऊपर सारा, ये जो अत्याचार होते, हंगामा होते जहाँ–तहाँ, ये सब हैं विख के ऊपर। वो कामेषु–क्रोधेषु। बस, काम की आष्टा पूरी न हुई तो मारना शुरू कर देते हैं उनको।...तो इसलिए तो देखो ये हंगामा (...), तुम्हारा ज्ञान जो है ना; इसलिए नहीं ले सकते हैं; क्योंकि भला वो जो विख,ज़हर,मूत; मूत न मिलेंगे तो उन बिचारे की जीवन कैसी चलेंगी। वो बोलता है– मूत बिगर जीवन तो व्यर्थ है एकदम। असुल एकदम ऐसे कहते हैं। मूत न पिया तो कुछ नहीं किया एकदम। समझा ना! और बाप यहाँ कहते हैं–हे बच्चों! तुम्हारा ये अंतिम, मृत्युलोक का अंतिम जन्म है। ये लड़ाई सामने खड़ी हुई है। ये वही लड़ाई है जो 5000 बरस पहले हुई थी। ये मृत्युलोक है, मृत्युलोक का अंत है, अमरलोक की आदि है। ऐसी–2 मुख्य बातें कंट्रास्ट करके, लिख करके। बाबा, अभी ये तो, इसमें तो कोई तकलीफ नहीं, ये तो एक रोज़ में लिख सकते हैं। ये बहुत अच्छी तरह से बैठकर लिख सकते हैं। ये तो जो है प्रदर्शनी, उसमें एक .... बोर्ड, उनमें अच्छे बड़े अक्षर में वो लिख सकते हैं। तो बहुत मुख्य बातें हैं ना यहाँ की, तो वो झट छप जानी हैं। अभी मैं लिख देता हूँ ना प्रदर्शनी में, अगर ये न होगी। मुझे रिपोर्ट मिलेगी– न होगी। मैं समझूँगा– दिल्ली वाले भी, वो पत्थर बुद्धि बन गए हैं शायद, ग्रहचारी बैठ गई है उनको; क्योंकि ग्रहचारी तो झट पड़ जाती है ना। अरे बच्ची, आज बाप को कहते हैं– मैं आपका हूँ अर्थात् मैं गोल्डनएज में जाता हूँ। कल छुट्टी देते थे, वो पत्थर के बुद्धि, पत्थर के बुद्धि। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति गाई हुई है ना बच्चे। बस, बाप को याद किया, ये हम(को) जीवनमुक्ति मिली, पारस बुद्धि बने, पारसनाथ बन जाए। यहाँ वो बुद्धि संशय हो गई, वही फिर पत्थर के बुद्धि, पत्थर बुद्धि। समझा ना। इसलिए बाबा बहुत पहाका भी देते हैं। देखो, मैं कितना इनको शृंगारता हूँ। सौ–2 करीस शृंगार, तब खोदरे का बच्चा खोदरा। अरे भई, अर्थ सुनो। वो खोदरे/गधे होते हैं ना, वो धोबी उठाकर जाते हैं ना। वो धोबी को वो अच्छी तरह से बढ़ाय करके, कपड़ा...धो करके, सुखा करके, रख करके जाएगा, वो खोदरा कोई वक्त में, उनको आदत होती है मट्टी में लेट लेने की, मट्टी में लेट करके धोबी का कपड़ा भी खराब कर देता है। तो इसके ऊपर सभी वो हैं, क्या बोलते हैं? (किसी ने कहा– पहाका) पहाके, पहेलियाँ। ...ये गधे जैसे बन गए हैं एकदम। कुत्ते, बिल्लियाँ जैसे बन गए। उनको मैं इतना शृंगार कराता हूँ, शृंगार कराते–2 अच्छी तरह से। बरस–2, दो–2 बरस, तीन–2 बरस शृंगार करता हूँ, फिर भी वो विकार में जा करके खोदरे के बच्चे खोदरे बन जाते हैं। अच्छे–2 शृंगार करता हूँ। इसके ऊपर बाबा बहुत पहाके भी देते हैं कि ये जो रीढ़ होती है ना, भेड़िया होती है ना, तो उनको ऐसे, देखा है कभी तुम भेड़िया का झुण्ड, तो जैसे वो मुसलमान जब वो नमाज़ पढ़ते हैं ना ईद, तो कपड़ा बहुत अच्छा–2 कर–करके, फिर ईद के ऊपर जा करके ऐसे

वो नमाज़ करते हैं, तो उसका जो पीठ देखने में आती है ना, बड़ी रंग–(बिरंगी) देखने में आती हैं। दूर से देखो, जैसे भेड़ियों का बड़ा भारी एक झुण्ड है। तो भेड़िया भी जो होते हैं ना, उनको भी मनुष्य, कोई उसका होता है दिन ऐसा, उनको भी रंग लगाते हैं। फिर भेड़ियाँ का झुण्ड और इनकी नमाज़ का झुण्ड हूबहू तुमको एक जैसा देखने में आएगा। तुम कभी फोटो निकाल करके देखो। तो वो भी ऐसे जो होती है रंगीन और वो भी कपड़ा करके जब ऐसे झुकते हैं सभी, उस समय में कोई फोटो निकालें, तो भेड़ियाँ को भी निकाल गया, उनका भी निकालो, तुमको इक्वल देखने में आएगा। उनको सिंधी में रीढ़ कहते हैं। तो उनके ऊपर भी पहाका है– रीढ़ क्या समझे राग से जिनकी बोली बोय...। समझा ना! सुरमण्डल के साज़ से यानी बाप जो ये बैठकर ज्ञान का जो वो सुना रहे हैं, ये साण्डे जो होते हैं ना, देखा है साण्डे! वो उसके ऊपर भर झाड़ के ऊपर जाते हैं जिसका तेल निकलते हैं, ऊपर में काँटे होते हैं और पूँछ होता है ...। तो उनको अहंकार, बस उनको पत्थर मारो तो ऐसे–2, ऐसे–2 करते रहेंगे। उसको कहते हैं साण्डे। तो यहाँ भी तो देह–अभिमानी, उसको साण्डे हम लोग कहते हैं। देहअभिमानी को हम साण्डे कहते हैं। वो साण्डे देहअभिमानी इस, जो सुरमण्डल का बाप आ करके ये ज्ञान सुनाते हैं, जिससे आत्मा अपनी चली जाएगी अपने स्वीट होम में चलो, वो क्या समझें! समझा ना। ये मिसाल देते हैं बहुत। ये भेड़ियाँ को तो नहीं, तो मनुष्य भेड़ियों से भी बदतर हो गए हैं, बंदर हो गए जैसे। बाप आते हैं खुद, आ करके इनको सिर्फ बहुत सीधी–2 बातें समझाते हैं– भई, देहअभिमान छोड़ो, अभी आत्म–अभिमानी भव। तो फिर देहअभिमानी बन जाते हैं, बिगड़ पड़ते हैं, ऐसे–2 वो क्रोध करते हैं, गुस्सा करते हैं ना, उसको कहते हैं–साण्डे। तो बाप बैठ करके ये बातें समझाते हैं अच्छी तरह से। तो भले आएँगे वहाँ बहुत ही, बिगड़ेंगे वहाँ बहुत। नहीं पर, ये तो बड़ी सीधी बातें हैं, जो बाबा कहते हैं लिख करके उसमें एक लगाय दो। एक ये भी तो लगा हुआ है, ये भी बड़े अक्षरों में। जो मुख्य–2 बातें हैं बड़े अक्षरों में। सीढ़ी भी जो बनाते हैं, सीढ़ी तो इतनी बड़ी, जैसे ये 9×6 है ना, इतनी बड़ी सीढ़ी बननी चाहिए, बड़ी क्लीयर एकदम। यहाँ ... एक/दो देखें भी वो समझानी। डायलॉग भी करना चाहिए। समझा ना! तो एक स्त्री, ...वो नगन करते हैं, वो शिवबाबा कहते हैं। उनका वो जो ससुर है, वो छोकरे का बाप, वो भी लाठी ले करके– इनको मूत दो, विख दो, विख दो। वो बिचारी पुकारती रहती है। वो भी डायलॉग बनाना चाहिए ऐसे। एक जगह में वो डायलॉग, दूसरी जगह में– विख दो, नहीं तो मैं मारता हूँ, छूरी मारता हूँ। वो पाँव पड़ती है, ये करती है। छूरी नहीं मारो, शिवबाबा को याद करो। ऐसे–2 दो/तीन किस्म के; क्योंकि किस्म भी तो तुम बच्चों को मालूम हैं सब कि ऐसे–2 होते हैं। छूरी भी खाते हैं, ज़हर भी देते हैं। मूत,मूत,विख,ज़हर– मैं इस बिगर नहीं रह सकता हूँ, मैं मरता हूँ उस बिगर। ऐसे–2 डायलॉग भी बनाओ आजकल साथ। चित्र पूरा होवे, बाकी जभी...आवे ना, उसमें डायलॉग बैठ करके दिखलाओ और उसमें दिखलाओ– भगवानुवाच्य बस ये अंतिम जन्म है। अभी तुम मेरे को याद (नहीं) करते रहेंगे तो तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनेंगे।..वो सीढ़ी में भी तो लिखा हुआ है क्लीयर एकदम। सिर्फ मुझे याद करने से मन्मनाभव, मद्याजीभव। ...हैं तो वो अक्षर इस गीता के ना। मन्मनाभव मद्याजीभव यानी मुझे याद करो तो तुम विष्णुपुरी का मालिक बन जाएगा। वो दिखला देना चाहिए, शिवबाबा के भी चित्र, विष्णु का भी चित्र और शिवबाबा कहते हैं ब्रह्मा द्वारा। बाबा देखो डायलॉग बनाने के लिए युक्ति बताते हैं। मुझे याद करो, शिवबाबा को याद करो, ब्रह्माकुमारियाँ मिलकर शिवबाबा

को याद करो, ये विष्णु के पुरी का मालिक बन जाएगा, तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाएगा। ये तो ऐसे–2 डायलॉग भी बनाने से ना, जो आएँगे, समझेंगे कि इनकी है ये गीता। मौत सामने खड़ा है ये, वही महाभारत की लड़ाई है। इसमें ही एक आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना होती है, अनेक धर्म विनाश होएगा। तो अच्छी तरह से, मनुष्य आएँ तो अच्छी तरह से समझकर भी जाएँ और विकारी भी आएँ तो एकदम प्रैक्टिकल में देखें तो क्या करते हैं; क्योंकि करते हैं सभी। जो भी आते हैं तुम्हारे आश्रम में, तो वो लोग भी समझ..जाए, तो ये बहुत सर्विस करते हैं।..तो ये बाप समझाया ना ये गीत में से कि बच्चे, ये गीत भी है, अरे भई गीत सुनाओ, फिर सुनाओ इनको, तो...सुने अर्थ। ये कोई हम लोग ने नहीं बनाया है। ये तो ये भगत लोग बनाते हैं और ये महिमा करते हैं। आगे हुआ था सो यहाँ करते हैं। जो कुछ भी यहाँ अभी होते हैं, इन सब यहाँ के ही जो उत्सव बनते हैं, मनाते हैं– ये शिव जयन्ती, फलानी जयन्ती, ये सारी, सभी अभी की बात है और बीच में कुछ होता ही नहीं है। सतयुग से ले करके द्वापर तक दूसरा कुछ होता नहीं है। राजाई होती है, बस। अच्छा पीछे तो गिरते हैं, वो भी बात छोड़ दो। अभी जो बाबा आया हुआ है, ये सब जो भी त्यौहार हैं ना, सब अभी के हैं। दीपमाला लो, दशहरा लो, शिव जयन्ती लो, कृष्ण जयन्ती लो, फलाना लो, सब यहाँ का। बाकी भक्तिमार्ग के, ये धन्ना भगत, फलाना भगत, ये सभी उस जगत के हैं। अभी वो तो भगत मार्ग वाले हैं ना, उनकी तो दुर्गति होती है ना। वो दुर्गतियों का भी बड़ी महिमा है। ऐसे नहीं कि नहीं। माया के भी चित्र बहुत ढेर। ये एक चित्र सिर्फ और माया के अनेक चित्र, जिनकी पूजा होती है, फलाना होते हैं, टीरा होती है। ये तो एक ही है, इनकी तो कोई को पता भी नहीं एकदम। शिव की पूजा बेशक होती है; परन्तु शिवबाबा आते हैं। अरे, आते भी हैं भारत में। शिव जयन्ती भारत में...। क्या करते हैं, कब आते हैं, बिल्कुल बच्ची कोई को भी पता नहीं है कि शिव जयन्ती क्यों मनाई जाती है, क्या है। शिव क्या आते हैं, जिसको हम कहते हैं– सर्वव्यापी है? तो भला सर्वव्यापी है तो क्या बहुत की जयन्ती मनानी चाहिए ना। सर्वव्यापी का कोई अर्थ ही नहीं है बच्चे। टेप सुनाओ। (गीत बजा– मरना तेरी गली में...) अभी एक ही बात है ना, मर करके और जीवेंगे तेरे गले में यानी गले का हार शिवबाबा, बाबा। बाबा कहेंगे। बाबा, हम सारी दुनिया से मर करके, हम अभी आपके गले का हार बन ग(ए) हैं। अच्छा, गले का हार भी बनते हैं, अभी बाबा–2 करते हैं। फिर बाबा कहते हैं– गले का हार तो मेरे सभी बच्चे हैं। ये ढेर, देखो ये साढ़े 500 करोड़ आत्माएँ हैं ना, ये मेरे बच्चे हैं ना या उसमें भी देखो नंबरवार हैं, कोई भी नहीं ये समझते हैं। नंबरवार हैं। ऊपर में भी नंबरवार हैं। पहले–2 गले के हार हैं हमारे ये देवी–देवताओं के धर्म वाली आत्माएँ। ठीक है। उन आत्माओं (में) भी मेरे गले के हार हैं पहले–2, जो सतयुग में आते हैं, राजाई करते हैं। फिर उनके साथ जो फिर प्रजा है। पहले–2 हमारे गले का हार ये हैं ना, ऊँचे–ते–ऊँचे पहले–पहले। पीछे मेरे गले का हार वो हैं ये इस्लामी,बौद्धी,क्रिश्चियन नंबर(...)। वो तो पीछे आते हैं ना बच्चे। आधा के बाद फिर ये नंबरवार आते हैं। तो यहाँ भी तो तुमको गले का हार बनना है ना, सतोप्रधान बनना है ना, बाबा का हार। पहले जाएँगे, हार सारा झाड़ पहले वहाँ जाएँगे, फिर नंबरवार वो झाड़ फिर उतरते आएँगे। ये तो बहुत समझ की बात है ना, सीधी–2 एकदम। अरे वो जो झाड़ है ना पाई–पैसे का, आम का, वगैरह, सो भी क्या होगा? सब झाड़ खतम हो जाएगा। अच्छा बीज बोओ, पहले तो थोड़े आएँगे ना पहले–5, पीछे बढ़ करके बड़ा हो जाएगा। चलो, झाड़ फिर खलास हुआ। कोयले से फिर भी

तो थोड़े निकलेंगे ना। थोड़े निकल–3 कर फिर बढ़े। तो बीज के नज़दीक हुआ ना। जो पहले–2 पत्ते निकले तो नज़दीक हुआ ना। तो ये भी ऐसे ही है। देखो, पहले–2...लक्ष्मी–(नारायण) यहाँ बैठे हैं। हम तपस्या करते हैं। पहले–2 लक्ष्मी–नारायण बनते हैं। तो यहाँ तो सारा दुनिया तो नहीं दिखलाएँगे ना। भई, श्री लक्ष्मी–नारायण का डिनायस्टी का राज्य था। भई इतना समय था। दिखलाएँगे तो दो ना, श्री लक्ष्मी–नारायण। ये भी लक्ष्मी–नारायण दिखलाते हैं, अकेले तो नहीं थे। लक्ष्मी–नारायण राज्य करते थे। तो ज़रूर बहुत होंगे ना वहाँ। उनके मित्र होंगे। डिनायस्टी होगी। किन्तु सूर्यवंशी डिनायस्टी, फिर चंद्रवंशी डिनायस्टी। आधा में फिर दूसरे भी आते हैं, ये भी वृद्धि होते हैं। ये अपना जब देवी–देवता है वो पतित बनने के कारण अपने को देवी–देवता नहीं कहलाते हैं। ये शोभता नहीं है। ये ड्रामा के प्लैन अनुसार। ये भी ड्रामा के (...), फिर होगा ऐसा ही। बाबा कहते हैं–ये कोई इनका दोष नहीं। ड्रामा ऐसे बना हुआ है। पर ड्रामा को भी समझना चाहिए ना। यहाँ आ करके बाबा ड्रामा समझाते हैं इसलिए कि पुरुषार्थ करो। अभी ड्रामा पूरा होता है, घर चलना है अभी। अभी पवित्र बनना है। बेहद के बाप से वर्सा लेना है। हद के बाप से वर्सा लिया। ये देखो याद रख देना, द्वापर से ले करके बाप से हद का वर्सा मिलता है और फिर जब बेहद का आते हैं, तुमको, जो भी तुम सतयुग में बाप–माँ बनेंगे, अभी से तुम्हारा वो वर्सा है 21 जन्म का। समझा ना। ये देखो, कितनी समझ की बात है! कि हम इस समय में जो फिर, वहाँ भी तो बाप होंगे ना। तो वहाँ मालूम नहीं पड़ता है कि हम कोई ये वर्सा लिया है। हमारा कोई 21 जन्म का वर्सा है या ये कोई ज्ञान है। उनमें ज्ञान कुछ भी नहीं। यहाँ तुमको समझाया जाता है कि 21 जन्म का वर्सा तुम देवी–देवता घराने में लेते हो, समझा ना बच्चे और लेते ही रहेंगे देवी–देवता ... में। वहाँ तो फिर एक–2 बाप से वर्सा तो मिलता है; परन्तु वो है– जैसा कर्म करेगा, तैसा वर्सा मिलेगा। यहाँ तुम जो बेहद का कर्म का समझाते हैं, वहाँ जाकर 21 जन्म तुमको वो सुख ही सुख मिलेगा। समझा ना! बादशाही भी तुमको 21 जन्म की, 21 पीढ़ी। तो वो गाया जाता है ना बच्ची, भारत में ये कहा जाता है– कन्या वो जो अपने 21 कुल का उद्धार करे। ऐसे गाया जा(ता) इसलिए तो कन्या का नाम बाला हो गया ना अभी। देखो, बाबा समझाते हैं– मुझे कन्हैया कहते हैं, तो मैं कन्याओं का भी (...), तुम अधर कुमारियाँ हो तो कन्या ना। तो बाबा बोलते हैं– कन्याओं द्वारा; क्योंकि तुम्हारा नाम बाला करना है। इसलिए तो कहा जाता है– शिवशक्ति। उसमें कन्याएँ भी हैं, अधर कन्याएँ भी हैं। कुमारी भी है, अधर कुमारी भी है। इनसे बैठ करके ये सारे इस विश्व को स्वर्ग बनाते हैं। देखो, ये तुम्हारे इस योगबल से, ये जो धरती, वायुमण्डल– ये सभी शुद्ध हो जाते हैं। इतनी तुम्हारे इस योग में ताकत है। ज्ञान में नहीं। ज्ञान तो तुम्हारा पद है। समझा ना! वो तो जितना तुम ज्ञान उठाएँगी और समझाएँगी। अरे पर योग जो है ना, वो मूल बात है तुम्हारे (लिए)। इस योगबल से तुम सभी सारी सृष्टि को पवित्र बनाती हो। ये पाँच तत्व भी पवित्र बन जाते हैं। इतनी ये ड्रामा में ताकत है, तुम्हारे योग में और योग में कोई टिक नहीं सकते हैं। ज्ञान में टिक जाते हैं, बड़ी अच्छी तरह से बैठ करके वो समझाते हैं, याद में ढेरी हुए पड़े हुए हैं बहुत; क्योंकि वो आधाकल्प जो देहअभिमान है ना, वो आत्म–अभिमानी बन करके रहना और बाप को याद करना– ये बड़ी डिफीकल्टी होती है। जिससे पूछो, बोले– बाबा को भूल जाता हूँ, बाबा को भूल जाता हूँ। बाबा, याद बाबा की रहती नहीं। अरे बाबा, जो तुमको 21 जन्म का वर्सा देते हैं, तुमको स्वर्गवासी, स्वर्ग का मालिक बना(ते), तुम उनको भूल जाते हो!

क्यों? तो बाबा, क्या करें, तूफान बहुत आते हैं। हाँ, तभी क्या यानी तूफान न आवें, ऐसे ही तुमको हाथ में वैकुण्ठ की बादशाही दे देवें? मेहनत बिगर कोई चीज़ मिलती है क्या? पुरुषार्थ तो करना पड़ेगा ना। पुरुषार्थ मूल ही है। ये तो ज़रूर लिखना है– मन्मनाभव मद्याजीभव, उसका अर्थ लिखना चाहिए– मामेकम् याद करो। ये अंतिम जन्म है मृत्युलोक का। ये लड़ाई अंतिम है एकदम। पीछे लड़ाई सतयुग में लगती नहीं। सतयुग में तो क्या, त्रेता में भी तो नहीं लगती; पर द्वापर में भी नहीं लगती। ये तो लड़ाई पीछे शुरू होती है। बाबा अभी जीते जी आपके पास हम मरते हैं। बस ऐसे नहीं फिर कि हम आपके पास जीते जी मर, फिर आपसे मर, फिर जा करके वहाँ जीते जी जीएँगे। नहीं, वो तो फिर वो जा करके हुआ, हाँ फिर भी बाबा को एक दफ़ा पहचाना ना, तभी भी तुम स्वर्ग के अधिकारी ज़रूर बनेंगे और फिर वहाँ जा करके चण्डाल बनेगा, ...नौकर–चाकर तो सब चाहिए ना बच्ची। ये सृष्टि जैसे ये है, तैसे वो है। कोई दूसरा फर्क तो नहीं है ना। वो भी, वो है मनुष्य को देवता कहते हैं, दैवी गुण वाले और ये हैं आसुरी गुण वाले। वहाँ सुख है, यहाँ दुःख है। बाकी राजा, रानी और प्रजा, बच्चे, डिनायस्टी, जैसे यहाँ है, तैसे यहाँ है। यहाँ दुःख है, वहाँ सुख ही सुख है। तो कोशिश करके ऊँचाइयाँ भी, देखो जो भी हैं, ये बिचारे कोशिश करेंगे ना। जमींदारी अच्छी हो, बड़ी लेऊँ। आज हम कमाया है। आज 5 बीघा है, कल हम 10 बीघा लेंगे। अच्छा और जास्ती कमाएँ, 10 एकड़ लेवेंगे। उन्नति के लिए तो सब कोई यहाँ मत्था मारते हैं ना। पुरुषार्थ क्या लिए करते हैं? पुरुषार्थ यहाँ सब करते ही हैं– धन जास्ती हो और बाप आ करके तुम्हारी सबकी झोली भर देते हैं, नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार। जो जितना चाहिए धन, इतना लो। जितना चाहिए। हाँ, और सुख भी वहाँ रहेगा तुमको। कोई भी दुःख–बीमारी वगैरह, देखो कितनी बीमारियाँ, मनुष्य क्या–2 हालत होती है, वहाँ बीमारी का कोई बात नहीं एकदम। बाबा कहते हैं अंग्रेजी में–एवर हेल्दी, सदैव निरोगी। अभी देखो, वर्सा तो देखो कैसा मिलते हैं। किससे बनते हैं सदैव निरोगी? योग से। फिर सदैव वेल्दी, धनवान किससे? ये ज्ञान से। ये चक्कर को याद करना, बस और कोई हिस्ट्री–जॉग्राफी है, कोई मैथेमेटिक्स, कोई धूर–छाई.....। देखो, कुछ भी बनते हैं कोई भी, तो स्कूल में कितना पढ़ना पड़ता है। एक छोड़कर दूसरा, कितना किताब, ढेर–के–ढेर किताब और यहाँ किताब का नाम नहीं। पढ़ाई में यहाँ किताब का नाम नहीं। पेन्सिल, मस का भी नाम नहीं। ये तो नोट्स लिखती हैं। बाकी कोई किताब थोड़े ही गवर्मेण्ट छपाती है जो पढ़ा जाता है।..ये नोट्स लिखती हैं बच्चे, जो डल हेडेड हैं वो (...)। हम कहाँ नोट करते हैं, मम्मा कहाँ नोट करती थी, ये बहुत अच्छी–2 बच्चियाँ कहाँ नोट करते हैं! ये नोट करती हैं, और जो कमजोर हैं, उनको समझाने के लिए, उनको नोट्स भेज देने के लिए। नहीं तो इनमें कोई किताब का, मस का कोई दरकार ही नहीं बिल्कुल ही। ये तो सुनना है। ..... बोलता है– मम्मा, हम पढ़ा नहीं है। अरे, अच्छे हुए जो नहीं पढ़े हो। पढ़ते तो और ही भूसा भरते तो मूँझ जाते। नक्कोड़ी हो, बिल्कुल अच्छा है यहाँ। तुमको सिर्फ दो अक्षर सुनाते हैं– अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो तुम्हारा जो भी पाप है, सब कट जाएगा और दूसरा– ये चक्कर याद करो, हमने 84 जन्म लिया– सतयुग में इतना, त्रेता में इतना, इतना–2, बस और तुमको कौन चाहते हैं कि तुम पढ़ो! अभी ये भी भूल जाती हैं। ऐसे तो तमोप्रधान बुद्धि बन गई है, ऐसी तो पत्थर बुद्धि बन गई है, ये थोड़ी–सी बात (...), बाप को याद करो, जिससे तुमको इतना सब 21 जन्म का वर्सा मिलता है। तुम लौकिक बाप को कितना याद करते थे, लौकिक पति को

कितना याद करते थे, अभी हम तुम्हारा बाप भी है और पतियों का पति भी है। समझा ना! तो क्या मैं फिर जो तुमको स्वर्ग का बादशाही (...) तो मुझे याद नहीं कर सकते हो? अपन को आत्मा निश्चय करो; क्योंकि ये भी तो सच कहते हैं ना। तुम पहले आत्मा हो, पीछे शरीर हो। तो तुम अपनी आत्मा को भूल करके, मैं–4, बकरी माफिक मैं–3 करते रहता हूँ, वो पता ही नहीं है कि मैं आत्मा हूँ, ये मेरा शरीर है। मैं जो कुछ करता हूँ सो आत्मा करती है। संस्कार भी आत्मा में। ये शरीर तो कर्मेन्द्रियों का पुतला मिला हुआ है। ये तो अभी हमको छोड़ना ही है। बाकी धारणा तो मुझ आत्मा में होती है ना। तो ये तो कोई भी मनुष्य को ये नहीं होते हैं। पण्डित वगैरह पढ़ते हैं, मैं पण्डित हूँ। समझा ना! वो अपने देह का अभिमान रखते हैं। यहाँ नहीं, यह देखो बाप कहते हैं– मैं देही हूँ। मेरे में सारा ये ज्ञान है, जो मैं बैठ करके तुम बच्चों को समझाता हूँ और आत्माओं से बात करता हूँ। इस समय में तुमको आत्मा निश्चय करना पड़ेगा। देही–अभिमानी भव। समझा ना! ये आगे भी बाबा ने कहा था कि बच्चों, अभी देही–अभिमानी भव। आत्मा ही सबको सुनना है। मेरे भी आत्मा में ज्ञान है। मैं वर्णन करता हूँ तो शरीर लेकर वर्णन करता हूँ; पर है मेरी आत्मा में ये सारा ज्ञान। मुझे कहते हैं, निराकार को कहते हैं–ज्ञान का सागर है, पतित–पावन है, सुख का सागर है, शांति का (...)। किसको कहते हैं? कोई शरीर देखने में आता है क्या? नहीं, वो आत्मा को ही कहते हैं, शिव को ही कहते हैं। तो मैं भला कैसे सुनाऊँ! मैं इनसे बैठ करके आत्मा को सुनाता हूँ कि तुम भी मेरे बच्चे हो। तुम वहाँ के रहने वाले हो। तुम यहाँ कर्म करते हो। कैसे कर्म करते हो, कितना जन्म लिया है– सो बैठ करके समझाता हूँ बच्चों को। तो भूलो मत। ऐसे नहीं कि यहाँ जा करके घर में शिवबाबा को ही भूल जाओ। बस। और तुम खेती वालों को, जो खेती करते हैं, उनको तो और ही सहज है बहुत। खेती करते रहो, शिवबाबा को याद करते रहो। काम करते रहो, शिवबाबा को याद करो। भले तुम बिल्कुल गरीब हो, बाबा गैरेंटी करते हैं कि जो करोड़पति हैं, लखपति हैं, वो इतना ऊँचा पद नहीं पाएँगे 21 जन्म का, जितना तुम गरीब पाएँगे। सिर्फ एक काम ज़रूर करो–अपन को आत्मा समझ करके, काम करते रहो, शिवबाबा को याद करो, बस। तुम गरीब के ऊपर कुछ है नहीं, कुछ भी नहीं। तुम एक चावल की थैली भी भर करके यहाँ ले आओ। समझा ना! वो आ करके दो। ट्रैन का भले खर्चा करो। वहाँ तो पैसा ज़रूर लेंगे, ऐसे मुफ्त में नहीं देंगे। यहाँ जब ले आओ ना, चावल की मुट्ठी आ करके दो और कहते भी हैं आकर– हाँ, चावल की मुट्ठी। ...मकान बनते थे तो बच्चियाँ भेज देती थीं– बाबा, एक ईंट के लिए हम आठ आना भेज देते हैं, हमारी ईंट डाल देना। अरे बच्ची, ये तुम्हारी आठ आने की ईंट थोड़े ही है। जिसने हमको 10 हज़ार रुपया दिया, उतना ही हम तुमको इसका फल देंगे; क्योंकि मैं गरीब निवाज़ हूँ ना। तुम्हारी ये ईंट ने तो एकदम चढ़ाय दिया बहुत। गरीब निवाज़ है ना। तो ये तो हिसाब ही हिसाब है ना बच्चे। बच्चों को होगा ही 10 रुपया, तो उनमें से परसेण्टेज में देंगे ना। बस ना। एक पैसा भई रुपये में से, चलो 10 पैसा दे दिया और वो 10 लाख, हमको 10 परसेण्ट, हमको लाख रुपया देना पड़े उनको– ईक्वल। इसलिए इनका नाम ही पड़ा हुआ है–गरीब निवाज़। ...इसलिए बाबा देखते हैं ना, गरीब बुड्ढे–बुड्ढियाँ देखते हैं ना; परन्तु ऐसे नहीं कि यहाँ आकर और फिर वहाँ जाकर सब भूल जाओ। नहीं, वहाँ जा करके बाबा से जो कहते हैं, बच्चे, वहाँ उठो–बैठो, सिर्फ शिवबाबा को याद करो। सिमरो–3, सिमरते रहो, याद करते रहो। ..... तुम अथाह सुख पाएँगे पीछे भविष्य 21 जन्म का। ये जो गाया जाता है, अभी के लिए,

सिमरो, सिमर–2 सुख पाओ, कलह–क्लेश मिटे सब तन के। ये अभी की बात है ना। गायन अभी का है ना। वो महिमा अभी की है। तो सिमरो, सिमरो, सिमर सुख पाओ, कलह–क्लेश मिटे सब तन के, जीवनमुक्त पद पाओ। ये अभी की बात है ना। अच्छा! चलो बच्ची, बहुत समझाया। अर्थ देखो समझाया ना तुम बच्चों को। अर्थ भी समझाया, सीढ़ी के लिए डायरेक्शन्स भी लिया–दिया और वो लिख भी ज़रूर दो कि शिवबाबा ये कहते हैं, मनुष्य ये कहते हैं। मुख्य बात है एकदम कम्प्लीट, जिसमें मनुष्य घुटका खाते हैं। वो तो है ही है कि...गीता। पानी का सागर से गंगा पतित–पावनी है या ज्ञान सागर की गंगा है? वो तो लिखे हुए हैं; परन्तु अटेन्शन दिलाना है बच्चों को। क्या करें, वहाँ तो कोई महारथी भी रहते हैं समझाने के लिए, घोड़ेसवार भी रहते हैं तो प्यादे भी रह समझाते। प्यादे तो बिचारे बित–2 करते रहेंगे समझाने के समय में। कोई मग़ज थोड़े ही है उनको। फिर भी महारथी जितना समझाएँगे वो भी कोई के बुद्धि में (...), सो भी देख–2 करके उनको अटैण्ड करना होता है।

अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप का दादा द्वारा दिल व जान, सिक व प्रेम से। अरे, आज बेहद का बाबा आ करके बच्चों को प्यार दे रहे हैं और एक ही बारी होते हैं जो आता हूँ, बच्चों को आ करके फिर अच्छी तरह से सिखलाता हूँ आत्माओं को; क्योंकि बाप तो एक है ना बच्चे। ये शरीरों का तो हर एक का अपना–2 बाप है ना। ये तो अच्छी समझ चाहिए ना। तो सभी बेहद के बच्चों प्रति, मैं सबको कल्याणकारी हूँ। ऐसा नहीं है कि सबका नहीं कल्याणकारी हूँ। सभी बच्चे हैं। सब जल मरे हैं काम चिक्षा के ऊपर। तो सभी को वापस ले जाना ही है। पीछे वो हिसाब–किताब खलास कराय करके, वो पद तो मिलेगा नहीं। जो पुरुषार्थ करेगा उनको..ऊँच पद मिलने का है। तो देखो, ये है तुम बच्चों की सबकी, ये है एम ऑब्जेक्ट– नर से नारायण। सत्यनारायण की कथा भई क्या है? नर से नारायण बनाने की है ना। अमरकथा भी अमरपुरी का मालिक बनना। तीजरी की कथा, भई तीसरा नेत्र मिलने की कथा, जिससे तुम त्रिकालदर्शी बनते हो। सच्ची कथाएँ सब बाप सुनाते हैं ना। और सब झूठी–झूठी। तो जबकि एम–ऑब्जेक्ट नर से नारायण बनने की, सत्य–सत् बाबा नर से नारायण बनाने की, तो धारण करनी चाहिए ना। ऐसे तो नहीं है कि बस, ब्राह्मण (में) कोई धारणा हो और धारण ही न करे। ..... इकट्ठा नहीं धारण करते हैं, सब..पोथी बैठ करके पढ़ते हैं। ये सब झूठियाँ कथाएँ इसको कहा जाता है। दंत कथाएँ, ये शास्त्र सभी हैं दंत कथाएँ। वो नीचे सीढ़ी। सीढ़ी तो बड़ी अच्छी है एकदम। ...पढ़ते हैं शास्त्र...। वहाँ कोई शास्त्र–वास्त्र थोड़े ही पढ़ते हैं।

अच्छा! ऐसे मीठे–2 पुरुषार्थी बच्चों प्रति बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।